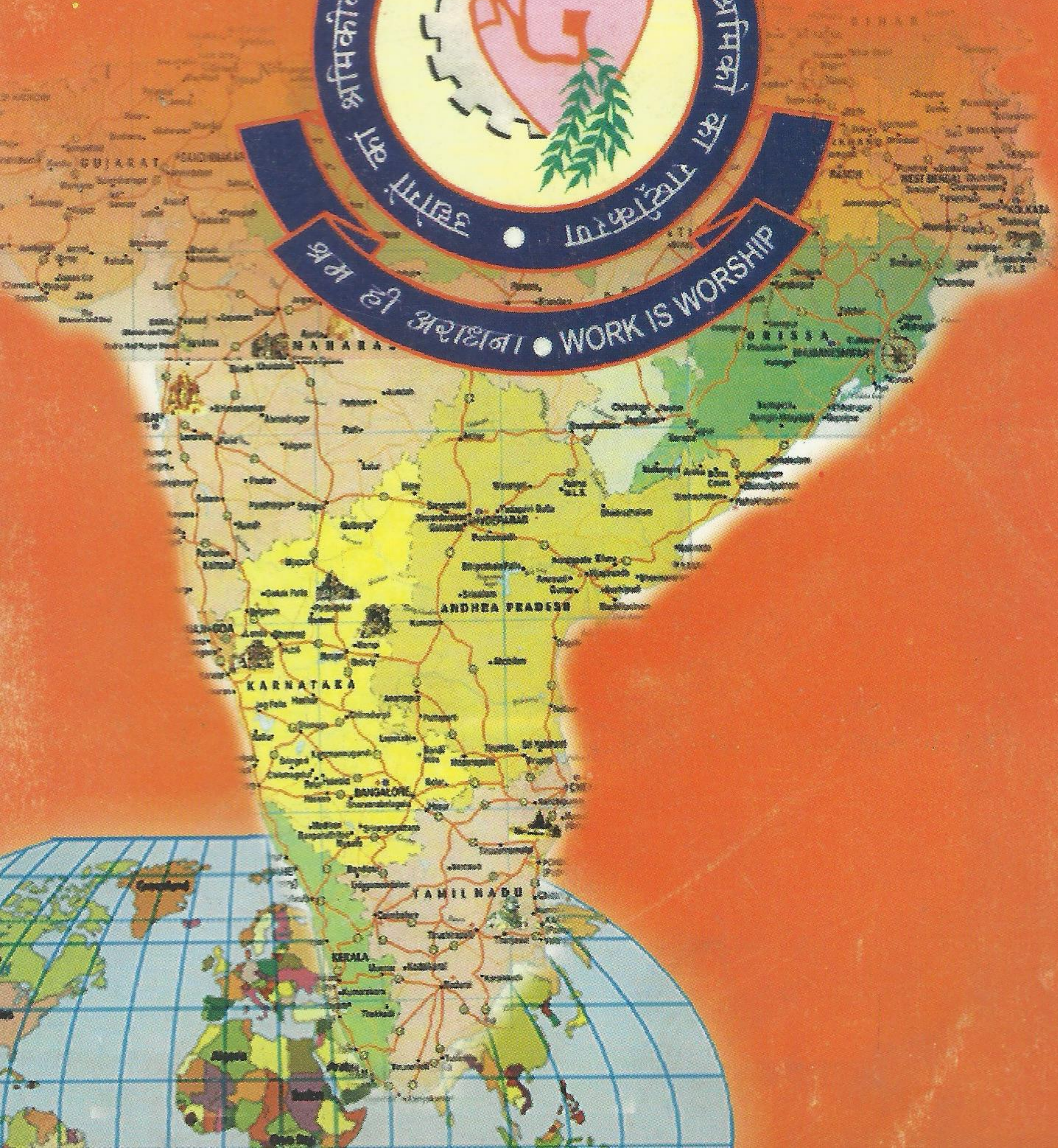
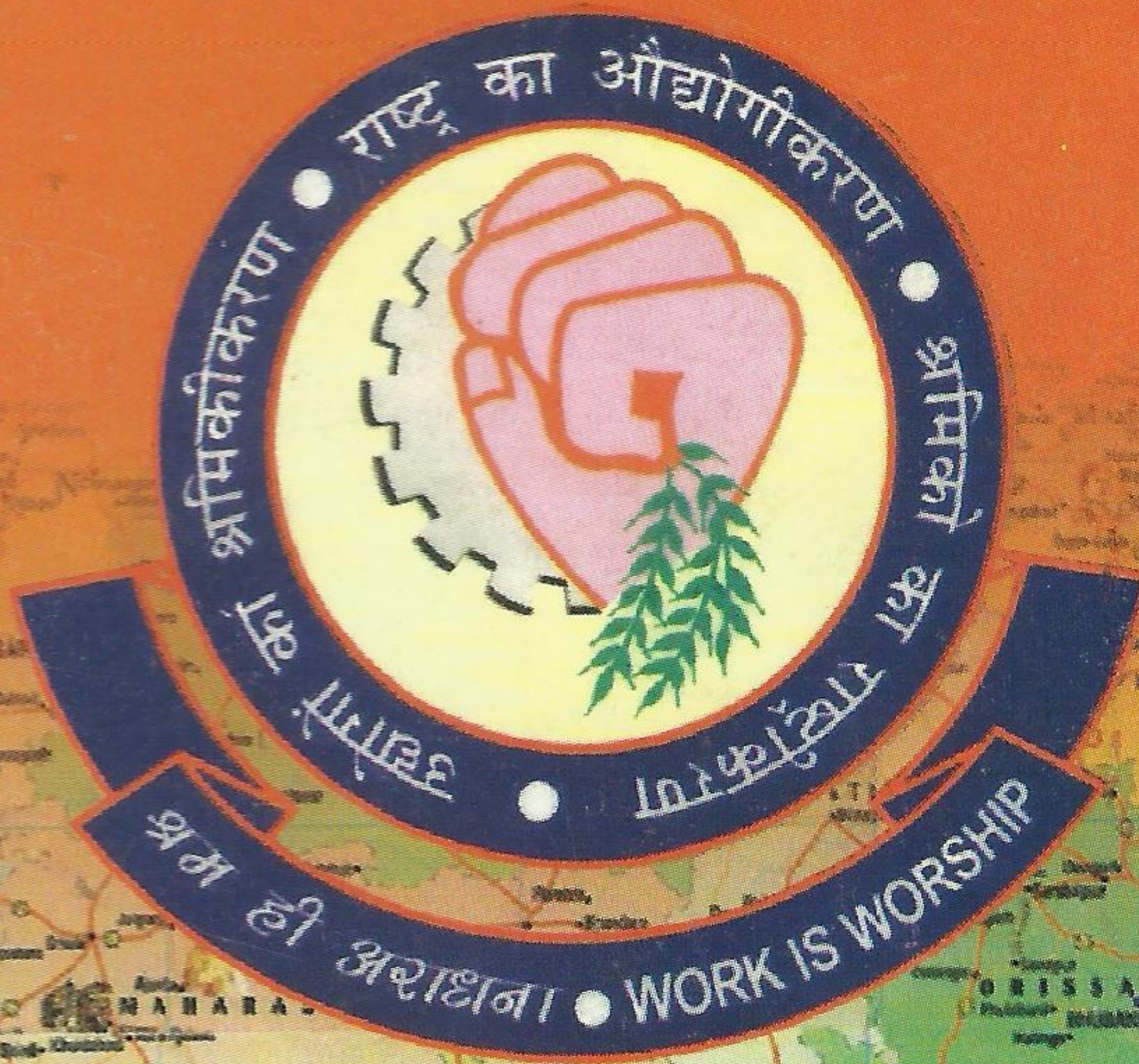


भारतीय मजदूर संघ

शून्य से शिखर तक



भारतीय मजदूर संघ

शून्य से शिखर तक

प्रकाशक

महामंत्री

भारतीय मजदूर संघ

-केन्द्रीय कार्यालय-

रामनरेश भवन, तिलक गली, पहाड़गंज, नई दिल्ली-- 110055

दूरभाष : 011-23562654, 23584212 फैक्स : 011-13582648

bms@india.com

प्रथम संस्करण - 2008

भारतीय मजदूर संघ

भारतीय मजदूर संघ की स्थापना से पूर्व देश और दुनिया में क्या वातावरण था? उद्योगों और मजदूरों की क्या स्थिति थी? मजदूरों से जुड़े मजदूर संगठनों की क्या भूमिका थी? उन सभी पहलुओं पर विचार करते हुये जब समीक्षात्मक नजर डालेंगे तो भारतीय मजदूर संघ की शून्य से शीर्ष तक की सही यात्रा का सही चित्र सामने आ पायेगा ।

यूरोपीय देशों में औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात समाज दो भागों में विभाजित था एक भाग में पूँजीपति थे जो कारखानों के मालिक थे, दूसरा भाग उन कारखानों में काम करने वाले, मजदूरों का था । पूँजीपतियों के पास असीमित आर्थिक अधिकार थे जिसके कारण वे राजसत्ता पर भी अप्रत्यक्ष तौर पर प्रभाव डालते थे । उनकी सोच थी कि मजदूरों से जादा से -ज्यादा काम लेना और कम से कम उन्हें पैसा देना, ज्यादा मुनाफा कमाने का सिलसिला जारी था । मजदूरों का खुला शोषण किया जा रहा था । पूँजीपतियों एवं राज्यों के इस व्यवहार के कारण मजदूरों में निराशा एवं मायूसी उत्पन्न होने लगी थी ।

मॉर्क्स एक पाश्चात्य जड़वादी दार्शनिक था । उसकी मान्यता थी कि किसी भी समाज का आर्थिक ढाँचा ही उसका मूल आधार है, जिस पर उस समाज के वैधानिक, राजनैतिक एवं सामाजिक आदर्शों का निर्माण होता है । दूसरी ओर उन्नीसवीं शदी के प्रारंभ से लेकर दूसरे दशक के पहुँचते-पहुँचते अंग्रेजों का अधिकार लगभग पूरे भारत वर्ष में हो चुका था । इसके अलावा उनके द्वारा भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के उद्देश्य से शिक्षा प्राणाली के माध्यम से भारत का नेतृत्व करने वाले उच्च वर्ग के लोगों को मन, कर्म एवं हृदय से अंग्रेज बनाने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी जिसका प्रभाव आज के समाज पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है ।

भारतीय मजदूर संघ की स्थापना से पूर्व की स्थिति 1919 में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन) की स्थापना हुई थी। इस संगठन में भारतीय श्रम संगठन को प्रतिनिधित्व करने की आवश्यकता महसूस की गई सरकार ने श्री एम. एन. राय को भारत के प्रतिनिधि के रूप में भेजा। जो I. L. O. द्वारा स्वीकार नहीं हुये कारण कि देश के मजदूर संगठन द्वारा प्रतिनिधि भेजा जाना चाहिए था। जबकि उस समय भारत में कोई केन्द्रीय श्रम संगठन नहीं था। 1919 से पूर्व कई जगहों पर यूनियनें चलाई जा रही थी संघर्ष भी कर रही थी। लेकिन कोई भी केन्द्रीय श्रम संगठन नहीं था। I. L.O. की आवश्यकता के अनुसार देश के नेताओं ने सोच-विचार किया। देश के प्रसिद्ध नेता लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में 31 अक्टूबर 1920 को 'एटक' 'ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' की स्थापना की गई। इस संगठन में पहले ही दिन या प्रारंभिक काल में ही 64 विस्तृत ट्रेड यूनियनों की सम्बद्धता प्राप्त हुई। जिसके 1,40,584 सदस्य थे। चूंकि इस संगठन में विभिन्न विचारधाराओं एवं नेताओं का गठजोड़ था इसलिये 3 मई 1947 को लौहपुरुष बल्लभ भाई पटेल के प्रयासों से गुलजारी लाल नन्दा की अध्यक्षता में 'एटक' से कई नेताओं एवं संगठनों ने अपने आपको अलग करतै हुये इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इंटक) की स्थापना की। स्थापना के समय 200 यूनियनों एवं सदस्यों की भागीदारी रही थी। जबकि इंटक को महात्मा गांधी का आशीर्वाद प्राप्त था। अक्टूबर 1948 में कांग्रेस से सोशलिस्ट ग्रुप बाहर हो गया तथा सोशलिस्ट पार्टी के नेता श्री अशोक मेहता के नेतृत्व में 'हिन्द मजदूर पंचायत' अस् की स्थापना 24 दिसम्बर 1948 को की गई। जो बाद में HMP और इंडियन लैबर कांग्रेस मिलकर HMS हो गये। स्थापना के समय ही 119 यूनियनें एवं 1,03,780 सदस्यों ने भागीदारी की। इसके बाद हिंद मजदूर सभा एवं एटक के कई छोटे-मोटे गुट अपने अपने संगठनों से अलग हुये और फिर इकट्ठे हुये। ऐसे यूनाइटेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस (UTUC) का जन्म अप्रैल 1949 में हुआ। यू. टी. सी. के गठन के समय 254 यूनियनों ने सम्बद्धता ली तथा उनके पास 3,31,991 सदस्य संख्या भी थी।

[गौरतलब है 1920 से 1948 तक चारों केन्द्रीय श्रम संगठनों का निर्माण आपस में मिल जुलकर गठित या पुनर्गठित होकर हुआ था। इनमें से कोई भी ऐसा केन्द्रीय श्रम संगठन नहीं था जिसके कार्य का प्रारंभ शून्य से हुआ हो।]

भारत में उस समय के नेता एवं उच्च वर्ग के लोग अपनी श्रेष्ठता को भूल चुके थे ऐसा वातावरण देश में चौतरफा दिखाई दे रहा था। जिससे मजदूर क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा क्योंकि इस क्षेत्र में भी पाश्चात्य संस्कृति पर आधारित विचाराधारा ही विद्यमान थी।

मजदूर क्षेत्र काफी व्यापक क्षेत्र था और आज भी है। इस क्षेत्र में भारतीय विचारधारा पर आधारित संगठन की आवश्यकता महसूस की गई थी। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु! परमपूज्यनीय माधवराव सदाशिव गोलवलकर (श्री गुरुजी) जी ने श्री दन्तोपंत ठेंगड़ी जी को जिम्मेदारी सौंपी थी। चूंकि उपरोक्त कार्य बड़ा ही कठिन और नया था इसलिये श्री ठेंगड़ी जी को मजदूर क्षेत्र का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने के लिये 1949 में कांग्रेस के अधीनस्थ मजदूर संगठन 'इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस' (इंटक) में काम करना पड़ा। उन्होंने बड़ी मेहनत और लगन से मजदूर क्षेत्र में कार्य करने का अनुभव प्राप्त किया। विशेष योगदान के लिये उन्हें इंटक से सम्बन्धित 10 संगठनों का अधिकारी बनाया गया और बाद में 1950 में राष्ट्रीय परिषद् का सदस्य बनाया। इसके बाद 1952 से 1955 के बीच के कालखण्ड में कायुनिस्टों से प्रभावित आल इन्डिया बैंक इम्पलाईज एशोशिएशन का प्रांतीय संगठन मन्त्री बनाया गया। श्री ठेंगड़ी जी ने जिस प्रकार अपनी मेहनत और लगन से मजदूरों में अपनी अलग से पहचान बनाई उसके कारण ही विभिन्न उद्योगों से जुड़े मजदूरों की समस्याओं के समाधान, श्रम कानूनों की सलाह देना, समझौता वार्ताओं में मदद करना, उनकी पहचान के बिन्दु बने। उन्होंने कम्युनिज्म के तत्व ज्ञान और कार्य पद्धति जैसे विषयों पर ज्ञान संचित किया। उन्होंने यह भी महसूस किया कि मजदूर जिस क्षेत्र में अधिकता में आते हैं वह समाज का शोषित पीड़ित एवं दलित भाग है जिनका शोषण होता आया है उन्होंने इस पीड़ा को ही संकल्प रूप में लेकर संगठन निर्माण में प्रमुखता दी थी। संगठन निर्माण करते समय निम्न बिन्दुओं को विशेष ध्यान में रखा।

(1) राष्ट्र हित, उद्योग हित को ही सर्वोपरि माना।

(2) राष्ट्र हित के साथ उद्योग हित और मजदूर हित का विचार किया गया।

- (3) जन-संगठन गैर-राजनीतिक रखने से संतुलन बना रहता है । इसलिए भारतीय मजदूर संगठन गैर राजनैतिक संगठन होगा, इसका विशेष ध्यान रखा ।
- (4) व्यक्तिगत नेतागिरी एवं जयकार से भी संगठन को दूर रखा ।
- (5) दलगत राजनीति एवं स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर चिंतन किया ।
- (6) मालिक और सरकार दोनों को विदेशी विचारधारा से ऊपर उठकर कार्य किये जाने का विचार दिया ।
- (7) भारतीय संस्कृति, परम्परा के अनुरूप मजदूरों को मजदूरों के लिये तथा मजदूरों द्वारा चलाये जाने वाला संगठन हो, उसकी चिंता भी की ।
- (8) भारत माता की जयकार का नारा सर्वप्रथम मजदूर क्षेत्र में दिया।
- (9) त्याग, तपस्या और बलिदान का प्रतीक भगवा ध्वज संगठन का हो इसकी व्यवस्था भी की ।
- (10) आदि शिल्पी विश्वकर्मा जी जिसे पूरा भारतवर्ष श्रद्धा और विश्वास से पूजता है इसलिये वह संगठन के भी आराध्य होंगे ।
- (11) 17 सितम्बर को श्रम दिवस के रूप में मनाने का तय किया गया।

भारतीय मजदूर संघ की स्थापना व नामकरण -

भारतीय मजदूर संघ की स्थापना 23 जुलाई 1955 को भोपाल में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी की जयन्ती के अवसर पर हुई । स्थापना के समय उपस्थित लोगों में पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश के 35 प्रतिनिधि मौजूद थे । भारतीय मजदूर संघ का नाम रखने से पहले श्री ठेंगड़ी जी के मन में जो नाम आया था वह 'भारतीय श्रमिक संघ ' और कागजात भी इसी नाम से बनाकर नागपुर से भोपाल पहुँचे थे । जब इस नाम पर चर्चा हुई तो उत्तरी भारत के विशेषकर पंजाब के कार्यकर्ताओं ने इस नाम का विरोध किया और कहा कि नाम का उच्चारण ठीक प्रकार से नहीं होगा इसलिये पंजाब और उत्तरी भारत के लोगों की भावनाओं का भी सम्मान करना चाहिये । इसलिये अन्त में भारतीय मजदूर संघ नाम रखा गया ।

संगठन के गठन के लिये संगठानात्मक स्वरूप पर चर्चा हुई संगठन के संयोजक के रूप में श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी को दायित्व सौंपा गया साथ ही पांच सदस्यों की समिति का गठन भी हुआ और संयोजक को यह भी अधिकार दिया गया कि वह समिति के सदस्यों की संख्या को बढ़ा सकते हैं। पाँच सदस्यीय समिति का स्वरूप इस प्रकार था श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी दिल्ली, श्री कैलाश प्रसाद भार्गव उज्जैन, श्री कन्हैया लाल बनर्जी हावड़ा, श्री राम प्रकाश गुप्ता लखनऊ, श्री वंसतराव परचुरे पुणे।

संगठन का कार्यालय: - प्रतिनिधियों के विचारविमर्श के बाद संगठन का कार्यालय अजमेरी गेट दिल्ली- 110006 पर तय हुआ।

संगठन का ध्वज : - के बारे में कई सुझाव आये परन्तु कोई निर्णय नहीं हो पाया केवल इतना ही तय किया गया कि आवश्यकता होने पर बिना किसी चिन्ह के 23 के अनुपात में ध्वज प्रयुक्त किया जाये।

श्रद्धेय ठेंगड़ी जी का प्रथम भाषण: - शाम को एक आम सभा की गई जिसका संचालन श्री गोपालराव ठाकुर ने किया। सभा में सर्व प्रथम श्री शिवकुमार त्यागी जी का भाषण हुआ उसके बाद श्री ठेंगड़ी जी का भाषण हुआ। आज भारतीय मजदूर संघ नाम से एक अखिल भारतीय संगठन का निर्माण हुआ है यह संगठन राष्ट्रभक्त मजदूरों द्वारा बलशाली बनेगा। भारत को वैभव सम्पन्न राष्ट्र बनाने की राह पर भारतीयता पर आधारित राष्ट्र के पुनर्निर्माण के इस साधन को हम शक्तिशाली करके रहेंगे। यह एक ईश्वरीय कार्य होने के कारण यशस्वी होगा ही। इस कार्य के लिये हमें देश की जनता एवं सहानुभूति रखने वाले समाज की शुभकामनाओं की आवश्यकता है।

इसके साथ श्रमिक आन्दोलन के विस्तार एवं श्रमिकों के कल्याण के लिये श्री ठेंगड़ी जी ने जिन बिन्दुओं पर प्रकाश डाला वे निम्न हैं।

भारतीय मजदूर संघ की स्थापना के दिन ही निम्न बातों का ध्यान रखा गया जो कि भारतीय मजदूर संघ की विशेषताएँ हैं :

वर्ग कल्पना को नहीं माना - प्रमुख मजदूर संगठनों में से जो कम्युनिष्ट विचारधारा पर आधारित अपना कार्य कर रही AITUC वर्ग संघर्ष को मानती है। उनके अनुसार समाज में दो वर्ग ही होते हैं एक पैसे वाला जिसे HAVES कहते हैं दूसरा वर्ग जिसके पास पैसा नहीं है उसे HAVE NOT कहते हैं। उनकी सोच है कि दो वर्ग में हमेशा संघर्ष चलता रहे।

दूसरा संगठन इंटक INTUC जो वर्ग संघर्ष को तो नहीं मानता था। परन्तु उनका मानना था कि परिस्थितियों को वर्ग-समन्वय के आधार पर सुलझाया जा सकता है, लेकिन वर्ग कल्पना को जरूर मानते हैं।

भारतीय मजदूर संघ सम्पूर्ण राष्ट्र को एक ही इकाई मानता है। उसके अंग उपांगों को ऐसा ही मानता है जैसे कि शरीर के सभी अंगों का होना। जिस प्रकार शरीर के किसी भी अंग में कांटा चुभता है तो जलन-दर्द का भी अनुभव पूरा शरीर करता है। ठीक उसी प्रकार समाज के घटकों का भी परस्पर संबंध होता है इसलिये भारतीय मजदूर संघ वर्गवाद में विश्वास नहीं करता।

जब हम कहते हैं कि संघर्षवादी नहीं है तो क्या समन्वयवादी है तो हमारा कहना रहता है कि हम किसी भी वाद (इज्म) में विश्वास नहीं रखते हैं। **हम समन्वयवादी नहीं अपितु समन्वयक्षम हैं।**

भारतीय मजदूर संघ ने समाज में दो वर्ग के सिद्धान्त को नकारते हुए कहा कि उद्योग के दो पक्ष हैं। पहला पैसे वाला, दूसरा पसीने वाला। मालिक और मजदूर इन दोनों के साथ-साथ महत्वपूर्ण पक्ष राष्ट्र भी है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। बिना एक-दूसरे के उद्योग चल नहीं सकता है। तभी भारतीय मजदूर संघ ने अपने सिद्धान्त के अनुरूप नारा दिया है "देश के हित में करेंगे काम, काम के लेगे पूरे दाम" तथा "पैसे और पसीने की कीमत समझो एक समान"।

भारतीय मजदूर संघ ने कहा है कि "कमाने वाला खिलायेगा" जबकि अन्य संगठन कहते हैं कमाने वाला खायेगा। दोनों सिद्धान्त में फर्क साफ नजर आ रहा है। भारतीय मजदूर संघ के कहने में माफ है जो व्यक्ति कमा रहा है वह परिवार का पोषण करेगा जबकि उनके नारे में स्वार्थ की भावना झलकती है।

राष्ट्रहित, उद्योगहित एवं मजदूरहित का नारा दिया है भारतीय मजदूर संघ ने राष्ट्र को सर्वपरि माना है, राष्ट्र खुशहाल है तो हम भी खुशहाल है । राष्ट्र सुरक्षित है तो हम भी सुरक्षित है, उसके बाद उद्योग की भलाई की बात की है क्योंकि उद्योग चलेगा तो ही मजदूर को मजदूरी मिलेगी । अन्य संगठनों ने मजदूर के बीच नारा दिया है कि 'चाहे जो मजबूरी हो, हमारी माँग पूरी हो' लेकिन भारतीय मजदूर संघ ने साफ तौर पर कहा है कि- 'देश के हित में करेंगे काम, - काम के लेगे पूरे दाम' । हम देश और उद्योग के हित में कार्य अवश्य करेंगे, लेकिन किये गये कार्य के बदले दाम-वेतन पूरा लेंगे- पूरा काम - पूरा दाम।

भारतीय मजदूर संघ ने मजदूरों को कहा है कि 'मजदूरों दुनियां को एक करो ।' पूरे विश्व को एक ही नजर से देखने की बात कहीं है जबकि अन्य मजदूर संगठनों का कल्पना है 'दुनियां के मजदूरों एक हो जाओ उनके इस नारे में वर्ग संघर्ष झलकता है तथा यह सम्भव भी नहीं कि दुनियां के मजदूर एक हो जायेंगे । कारण है कि सबकी आवश्यकतायें और परिस्थितियां अलग-अलग होती है ।

भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित प्रतीक : - मजदूर क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ के उदय होने के पश्चात भारतीय संस्कृति से जुड़े प्रतीक चिन्ह दिखाई देने लगे।

भगवाध्वज - भारतीय मजदूर संघ ने विश्व प्रेम, त्याग और तपस्या का प्रतीक को ही अपना ध्वज बनाया है । भारत में प्राचीनकाल से चले आ रहे भगवा ध्वज को मजदूरों के बीच फहराया जिसका भारतीय जीवन प्रणाली के सर्वोच्च मूल्यों से सम्बन्ध रहा ।

नया प्रतीक चिन्ह : - भारतीय मजदूर संघ का प्रतीक चिन्ह भी पूर्णतया : भारतीयता पर ही आधारित है । इसके ऊपर चक्र जो दिखाया है वह उद्योगीकरण का प्रतीक है, अनाज की बाली खेती और समृद्धि का प्रतीक है, बंधी हुई मुट्ठी संगठित शक्ति का प्रतीक है, और अंगूठा मनुष्य के कौशल एवं प्रगति का प्रतीक है ।

राष्ट्रीय श्रम दिवस - भारतीय मजदूर संघ की स्थापना से पूर्व के पाँच दशकों में श्रम आंदोलन देश में खड़ा हो चुका था। भारतीय मजदूर संघ ने अपने स्थापना काल से ही तय कर लिया था कि भारत का श्रम दिवस आदि शिल्पकार विश्वकर्मा जी की जयन्ती वाले दिन ही होगा । इसके पीछे कारण भी है कि इस दिन को भारत के श्रमिक

प्राचीनकाल से ही श्रम दिवस के रूप में मनाते आये हैं। आधुनिक काल में भी विश्वकर्मा जयन्ती के दिन मजदूर अपने औजारों की पूजा करत हैं। जमशेद नगर के टाटा उद्योग, में कार्यरत सभी पंथ के मालिक एवं मजदूरों के द्वारा विश्वकर्मा जयन्ती पर यन्त्रों की पूजा की जाती है। मजदूर उस दिन छुट्टी भी करते हैं। यद्यपि शुरु-शुरु में वामपंथी विचारधारा के लोगों द्वारा इस दिन को मनाने का उपहास किया गया। परन्तु अब देश का चित्र ही बदला गया है। कई राज्य सरकारों ने इस दिन को श्रम दिवस घोषित कर रखा है। इसके अलावा भारत सरकार द्वारा भी मजदूर क्षेत्र में अति कुशल श्रमिकों को प्रतिवर्ष विश्वकर्मा पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है।

विश्वकर्मा क्षेत्र : - भारतीय मजदूर संघ ने सर्वप्रथम समाज के ऐसे मजदूरों के बारे में विचार प्रस्तुत किया जो कि मालिक व मजदूर एक ही व्यक्ति हैं जैसे कुमार, चर्मकार, लोहार, बढ़ई आदि। मजदूरों के इस क्षेत्र को विश्वकर्मा क्षेत्र के नाम से जाना गया। अब इस विश्वकर्मा क्षेत्र को चीन ने भी स्वीकार किया है।

स्थापना का पहला दशक - शुरु-शुरु में भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं की स्थिति बड़ी कठिन थी। मालिकों व सरकार की ओर से दुश्मनी का बर्ताव था जो कि कामगारों को निराश करने वाला था। इस क्षेत्र में जो यूनियन पहले से चल रही थी उनका भारी विरोध और उपहास भी झेलना पड़ता था। उनके पास धन, बल और जनशक्ति थी। उनकी अपेक्षा हमारे कार्यकर्ताओं के पास इन सब चीजों का अभाव तो था ही, बल्कि कानूनी जानकारी भी नहीं थी, यही तक आवश्यक विषयों का ज्ञान तक भी नहीं था, ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी कार्यकर्ताओं ने अपने मन को स्थिर रखा और अपने सन्तुलन को बिगड़ने नहीं दिया। एक दृढ़ निश्चय के साथ कि, " हम विजयी होकर ही रहेंगे " इस विश्वास से वह अपने कार्य की गति को बढ़ाते रहे।

प्रखर राष्ट्रभाव का परिचय - भारतीय मजदूर संघ में प्रखर राष्ट्रभावना होने के कारण 1962 ई. में चीन के द्वारा भारत पर आक्रमण के समय तथा 1965 ई. में पाकिस्तान के भारत पर आक्रमण के समय भारतीय मजदूर संघ की इकाईयों और महासंघों ने राष्ट्रीय मजदूर मोर्चा में पहल की और अपनी पूरी शक्ति लगाकर सरकार तथा जवानों को सभी प्रकार से सहयोग देने की पूरी कोशिश की थी। संगठन की सम्पूर्ण ताकत को राष्ट्र को समर्पित करके प्रखर राष्ट्रीयता का परिचय दिया था। इसके बाद 1971 का बंगला मुक्ति

युद्ध में भी राष्ट्रीय मजदूर मोर्चा बनाकर भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई। कारगिल युद्ध के समय भारतीय मजदूर संघ के सदस्यों ने अविरत बिना मुआवजे के अतिरिक्त काम करके समय पर उसे पूरा करके ही विश्राम किया और अपनी देशभक्ति का परिचय दिया है।

पहचान का सर्वप्रथम बिन्दु : - उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की लड़ाई को भारतीय मजदूर संघ ने मजदूर क्षेत्र में उठाया तथा अन्य कई विषयों को पहली बार स्पर्श करके सभी के सामने लाया। मजदूर क्षेत्र में अन्य केन्द्रीय मजदूर संगठन जिन विषयों पर ध्यान देने को तैयार ही नहीं थे ऐसे बुनियादी विषयों का अध्ययन करके बड़े आन्दोलन भी खड़े किये। जिस उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के ऊपर मजदूरों को महंगाई भत्ता मिलता है वह निर्देशांक निकालने की पद्धति ही गलत थी ऐसी आवाज भारतीय मजदूर संघ ने पहली बार उठाई। इस विषय पर 20 अगस्त 1963 को मुम्बई बन्द आंदोलन सफल हुआ। एटक जैसे संगठनों ने शुरू में इसका विरोध किया किन्तु बाद में सभी केन्द्रीय श्रम संगठनों ने साथ दिया और मुम्बई बन्द आन्दोलन सफल हुआ। लकड़ा वाला समिति का गठन हुआ। लिंकिंग फैक्टर बढ़ा तथा मजदूर के महंगाई भत्ते में भी बढ़ोतरी हुई। यह भारतीय मजदूर संघ के विजय की निशानी है।

अगला कदम :- भारतीय मजदूर संघ के संगठन के विस्तार की दृष्टि से अगला कदम जो उठाया गया था वह सात महासंघों की स्थापना का था जिनका विवरण इस प्रकार है-

1. भारतीय इंजीनियरिंग महासंघ
2. भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर महासंघ
3. भारतीय रेलवे मजदूर महासंघ
4. अखिल भारतीय विद्युत मजदूर महासंघ
5. अखिल भारतीय शुगर मिल मजदूर महासंघ
6. अखिल भारतीय खदान मजदूर महासंघ
7. भारतीय वस्त्र उद्योग कर्मचारी महासंघ

इन सभी सातों महासंघों की स्थापना भारतीय मजदूर संघ के प्रथम अधिवेशन से पूर्व ही हो चुकी थी । 1964 में बैंकिंग उद्योग में नेशनल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ बैंक वर्कर्स की स्थापना हो गई थी लेकिन 1967 के प्रथम अधिवेशन तक इसकी सम्बद्धता भारतीय मजदूर संघ के साथ नहीं हो पाई थी । इसलिये इसकी घोषणा नहीं हो पाई थी ।

भारतीय मजदूर संघ का प्रथम अधिवेशन : - 12- 13 अगस्त 1967 को दिल्ली में पहला अधिवेशन कम्युनिटी सेन्टर, पंचकुइयाँ में हुआ । उस समय भारतीय मजदूर संघ से सम्बन्धित महासंघों, 541 यूनियनों 2,45,902 की सदस्य संख्या थी । 23 जुलाई 1955 को शून्य से शुरु किया गया कार्य यहाँ तक पहुँचा । श्री ठेंगड़ी जी ने अधिवेशन के उद्घाटन के रूप में बाबा साहेब अम्बेडकर जी के दाहिने हाथ के रूप में मान्यता प्राप्त दलित नेता ही दादा साहेब गायकवाड़ को आमंत्रित किया था । सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखते हुये भारतीय मजदूर संघ ने अपने प्रमुख श्रमिक गीत में शोषित, पीड़ित, दलित जनों क भाग्य बनाने वाले हम के भाव को रखा । “श्री गायकवाड़ को प्रमुख अतिथि के रूप में बुलाकर कार्यकर्ताओं में सामाजिक समरसता का बीजारोपण भी प्रथम अधिवेशन में ही किया ।

1967 से 1970 तक गगन उड़ान - भारतीय मजदूर संघ का प्रथम अधिवेशन दिल्ली में हुआ दूसरा अधिवेशन 11-12 अप्रैल 1970 कानपुर में सम्पन्न हुआ । इस तीन बरस के कालखण्ड में जहाँ संगठन का तेजी से विस्तार हुआ वहीं कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ भी घटी जिनका विवरण इस प्रकार है -

19 सितम्बर 1968 को केन्द्रीय कर्मचारियों की देशव्यापी हड़ताल में: - भारतीय मजदूर संघ से संबन्धित भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ और भारतीय रेलवे मजदूर संघ ने सक्रिय रूप से भाग लिया । जिसके कारण कई कार्यकर्ताओं को जेल जाना पड़ा, कई कार्यकर्ताओं के निलम्बन हुये और कई अपनी नौकरी खो बैठे । श्री दन्तोंरात ठेंगड़ी और श्री बी .एल. शर्मा को जेल जाना पड़ा । हड़ताल के बाद सभी संगठनों को इकट्ठा करने में भारतीय मजदूर संघ का महत्वपूर्ण योगदान रहा । जनवरी 1969 में दिल्ली में सभी संगठनों का सम्मेलन हुआ तथा इसमें भारतीय मजदूर संघ ने हड़ताल में सरकार के उग्र

तानाशाही के खिलाफ आई .एल .ओ. में उसकी शिकायत की जाये ऐसा प्रस्ताव रखा जिसे सभी संगठनों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया ।

राष्ट्रीय श्रम आयोग को लिखित आवेदन - भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीश श्री गजेन्द्र गड़कर जी की अध्यक्षता में केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय श्रम आयोग भारतीय की नियुक्ति की गई । इस आयोग को भारतीय मजदूर संघ ने लिखित रूप में आवेदन दिया । बाद में पुस्तक रूप में यह श्रम नीति प्रकाशित हुई । भारतीय मजदूर संघ का तब तक की श्रम नीति का समग्र संकल्प उस पुस्तक में है जो भारतीय मजदूर संघ की विशेष पहचान को दर्शाता है । मजदूर क्षेत्र का एक मान्यता प्राप्त ग्रंथ के नाते आज भी उसका महत्व है ।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी को भारत के मजदूरों का राष्ट्रीय माँगपत्र दिया जाना - 22 सितम्बर 1969 को भारतीय मजदूर संघ में तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री वी .वी. गिरि जी को राष्ट्रीय माँगपत्र (नेशनल चार्टर ऑफ डिमांड्स) दिया गया । भारतीय मजदूर संघ के इतिहास में यह राष्ट्रीय माँगपत्र एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । इस माँग पत्र में मजदूरों की ही नहीं अपितु पूरी मानवशक्ति का विचार किया गया । कर्तव्य का अनुपालन कैसे हो इस विषय में राष्ट्रीय माँगपत्र महत्वपूर्ण स्थान रखता है । इस माँगपत्र को देने के लिये पूरे भारत से लगभग 25,000 मजदूरों ने दिल्ली रैली में हिस्सा लिया । उक्त प्रदर्शन केन्द्रीय कामगार संगठन द्वारा किया गया अभूतपूर्व प्रदर्शन था । इस ज्ञापन की महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस माँगपत्र की सभी केन्द्रीय श्रम संगठनों ने यह कहकर आलोचना की कि, “भारतीय मजदूर संघ अभी बच्चा है और मजदूरों की समस्याओं से अभी अनभिज्ञ है । बोनस! वो भी केन्द्रीय कर्मचारियों को, भला केन्द्रीय कर्मचारियों को कैसे बोनस मिलेगा? संयोग से उसी समय सर्वोच्च न्यायालय ने बंगलौर नगर महापालिका में काम कर रहे कर्मचारियों को बतौर विलम्बित वेतन, बोनस दिये जाने का फैसला दिया, तब सभी आलोचना करने वाले श्रम संगठनों की आँखें खुली, कि सबको बोनस मिल सकता है ।

रेल कर्मचारियों की हड़ताल - 9 मई 1974 में रेलवे उद्योग में कार्यरत श्रम संगठनों को श्री जॉर्ज फर्नांडीस ने इकट्ठा किया । इस क्रम में स्थापित कार्यसमिति में भारतीय मजदूर संघ से संबन्धित भारतीय रेलवे मजदूर संघ भी था । भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं

ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। " उन्होंने आवाज को बुलन्द किया कि राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान नहीं होने देंगे। संघर्ष तो होगा परन्तु विनाश नहीं होगा।" इसका पूरा ध्यान रखा गया। इस हड़ताल में रेलवे कर्मचारियों को बोनस दिये जाने की माँग भी शामिल थी। तत्कालीन रेलमंत्री श्री ललित नारायण मिश्र ने भारतीय मजदूर संघ के रेल कार्यकर्ताओं को बुलाकर कहा कि, "आप हड़ताल में शामिल मत होवे। आपको मान्यता दे दी जायेगी" भारतीय रेल मजदूर संघ के कार्यकर्ता प्रलोभन में नहीं आये। हड़ताल लम्बी खिंच गई। जॉर्ज फर्नांडीस इस हड़ताल के संयोजक थे और वे जेल में थे उन्होंने मा. ठेगड़ी जी को पत्र लिखा कि हड़ताल लम्बी हो गई है इसका कोई समाधान निकाले। हम आपको यह अधिकार देते हैं। श्री ठेगड़ी जी ने हड़ताल में शामिल सभी यूनियनों के प्रतिनिधियों से बात करके 27 मई 1974 को हड़ताल वापस करवा दी। जेल में बंद कर्मचारी बाहर आये, हजारों कर्मचारी जिनकी सेवाएँ समाप्त कर दी गई थी वे भी काम पर लिये गये परन्तु 127 कर्मचारियों को अगले दो-तीन वर्षों में काम पर लिया गया। इस भूमिका से भी भारतीय मजदूर संघ की पहचान बनी। गम्भीर चुनौती का पूर्व अनुमान : - भारतीय मजदूर संघ के चतुर्थ अधिवेशन अमृतसर में 19-20 अप्रैल 1975 को श्री ठेगड़ी जी ने अपने सम्बोधन में कहा था कि, "राष्ट्र पर तानाशाही का संकट आ सकता है" इसके लिये कार्यकर्ताओं को पहले से सावधान किया। 26 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने तानाशाही रूप में आकर देश में आपातकाल की घोषणा कर दी थी। विरोधी दलों के हजारों कार्यकर्ताओं को जेल में डाल दिया। देश में भाषण, विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और संगठनों की स्वतंत्रता को छीन लिया। मजदूरों के लिये यह संक्रमण काल था। आपातकाल से पूर्व जो वामपंथी और समाजवादी नेता अपने आपको लड़ाकू समझते थे वह बलहीन हो गये और सरकार के खिलाफ आन्दोलन नहीं किया जाये उनके इस व्यवहार के कारण कार्यकर्ता और मजदूरों ने उनका साथ नहीं दिया। सरकार ने मजदूरों का बोनस छीन लिया। ऐसे समय में भारतीय मजदूर संघ ने सरकार के मजदूर विरोधी नीतियों के खिलाफ आवाज उठाई जिसके कारण सैकड़ों कार्यकर्ता रासुका के तहत जेल में डाल दिये गये और आन्दोलन को चलाने के उद्देश्य से कई प्रमुख कार्यकर्ता भूमिगत हो गये और उन्होंने भिन्न-भिन्न तरीकों से मजदूरों को जाग्रत रखा और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई। इसी दौरान हजारों मजदूरों ने सत्याग्रह किया जिसके कारण 5 हजार मजदूरों जेल जाना पडा जो कम से कम 6 माह

व कुछ को साल भर से अधिक जेल में रहना पडा । यह सिलसिला मार्च 1977 तक चला । आपातकाल में आन्दोलन को जिन्दा रखकर आवाज को बुलन्द करने के कारण इस कालखण्ड में सोने की भांति अग्नि परीक्षा से गुजर कर भारतीय मजदूर संघ अन्य सभी केन्द्रीय संगठनों से अलग व जुझारु संगठन सिद्ध हुआ। 1977 के बाद भारतीय मजदूर संघ की अभूतपूर्व प्रगति - 26 जून 1975 से पूर्व देश में भारतीय मजदूर संघ को भी अन्य केन्द्रीय श्रम संगठनों की तरह समझा जाता था । लेकिन आपातकालीन कालखण्ड में भारतीय मजदूर संघ के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं और सदस्यों ने जो वीरता दिखलाई उसके कारण देश के मजदूर क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ के प्रति धारणा ही बदल गई । लोग सोचने पर मजबूर हो गये कि भारतीय मजदूर संघ वास्तव में अन्य श्रम संगठनों से अनूठा है । अप्रैल 1975 में जहां भारतीय मजदूर संघ से सम्बन्धित यूनियनों की संख्या 1313 थी वो 1978 में 1515 हो गई । सदस्य संख्या 8 लाख 40 हजार से बढ़कर 10 लाख 83 हजार हो गई ।

जून 1975 से 1980 का राजनैतिक परिदृश्य - 1975 में श्रीमती इंदिरा गांधी ने आपातकालीन घोषणा कर दमन नीति अपनाई थी । फरवरी 1977 में चुनाव की घोषणा की गई, 22 मार्च 1977 को कांग्रेस को छोड़कर अन्य 4 दलों ने एकत्र होकर जनता पार्टी बनाई, चुनाव में बहुमत मिला, जनता पार्टी की सरकार बनी । 1979 के अन्त में पार्टी में टूट-फूट हो गई । 10 जून 1980 को श्रीमती इंदिरा गांधी पुनः 273 बहुमत के साथ चुनकर आई और देश की सत्ता संभाली ।

अन्य संगठनों का समय के साथ बदलना - इस राजनीतिक परिदृश्य में भारतीय मजदूर संघ को छोड़कर अन्य केन्द्रीय श्रम संगठनों की नीतियों में जो परिवर्तन हुये उसे समाज ने देखा । अलातकाल में मजदूरों की स्वतंत्रता पर कुठारघात और बोनस के हक को छीने जाने पर भी इंटक ने इसके खिलाफ कोई भी आन्दोलन नहीं किया, एच .एम .एस. ने भी नाममात्र के आन्दोलन किये जबकि 1974 के पहले इनके तेवर बड़े तीखे रहे थे । जब जनता पार्टी सत्ता में आई तो एटक और इंटक सरकार पर गुर्राने लगे । जब 1980 में पुनः इंदिरा गांधी सत्ता में आई तो इंटक और एटक सरकार के साथ तालमेल करने लगे । कुल मिलाकर भारतीय मजदूर संघ को छोड़कर सभी संगठनों ने बदलते राजनीतिक परिपेक्ष के अनुसार अपनी कार्य पद्धति को अपनाया जबकि भारतीय मजदूर

संघ ने मालिक और सरकार से उसी अनुपात में सहयोग की नीति अपनाई जिस अनुपात में उन्होंने मजदूरों के साथ सहयोग किया। सरकार ने विरोध किया तो भारतीय मजदूर संघ ने भी उसका विरोध किया। इसी नीति ने भारतीय मजदूर संघ की पहचान बनाई है। आगामी वर्षों में अपनी नीति के अनुरूप आन्दोलन किये।

- आपात कालीन समय में भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ता अग्नि परिक्षा से गुजरे।
- जनता पार्टी के शासन काल में बोनस के प्रश्न पर और रेलवे कर्मचारियों पर हो रहे आत्याचारों के खिलाफ आन्दोलन किया।
- औद्योगिक सम्बन्ध विधेयक के खिलाफ संघर्ष किया।
- राष्ट्रीय अभियान समिति द्वारा किये गये संघर्ष में शामिल हुए।

आपातकालीन समाप्ति पर भारतीय मजदूर संघ का एचएमएस में विलय का प्रस्ताव -

1978 में BMS का HMS में विलय का प्रस्ताव श्री मधुलिमये ने श्री ठेंगड़ी जी को पत्र लिखकर जाहिर किया। श्री ठेंगड़ी जी ने भी उन्हें पत्र लिखकर कहा – MARRY IN HASTE REPENT IN LEISURE AND REST. जब बात नहीं बनी तो श्री मोहन धारिया के यहाँ मा. बाला साहेब देवरस जी को चाय पर आमंत्रित किया गया। मोहन धारिया ने भी विलय का प्रस्ताव रखा। तब मा. बाला साहेब जी ने यह कहकर “कि संगठन स्विच ऑन और स्विच ऑफ की तरह नहीं चलते हैं” और वार्ता को वही विराम लगा दिया।

भारतीय मजदूर संघ का रजत जयन्ती वर्ष : - भारतीय मजदूर संघ के स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर 1980 में कई कार्यक्रम हुए “**राष्ट्रीय श्रम दिवस**” यानि विश्वकर्मा जयन्ती बहुत बड़े पैमाने पर पूरे भारत में मनाई गई। देश में 500 से ऊपर स्थानों पर बड़ी संख्या में सभा को गई जिसके लिये भारतीय मजदूर संघ की काफी सराहना की गई। 1980 में ही विश्वकर्मा जयन्ती को मंहगाई के मुद्दे के साथ जोड़ कर 15 दिनों का मंहगाई विरोधी पखवाडा मनाया। 500 से भी ऊपर स्थानों में यह कार्यक्रम हुये।

राष्ट्रीय अभियान समिति के कार्यक्रमों में अग्रिम भागीदारी करना :- ट्रेड यूनियनों की राष्ट्रीय अभियान समिति नेशनल कंपेन कमेटी (NCC) द्वारा आंदोलनात्मक कार्यक्रम

आयोजित किये गये । इस समिति के सदस्य होने के नाते उन सभी कार्यक्रमों में उत्साह और मनोयोग से भाग लिया । सार्वजनिक क्षेत्र के यूनियनों की समिति की 14 से 16 मार्च 1988 के त्रिदिवसीय हड़ताल में समर्थन, केन्द्र सरकार द्वारा औद्योगिक बिल को संसद में लाया गया जिसका विरोध NCC ने करने का निर्णय किया । 18 मई 1988 को दिल्ली में भारतीय मजदूर संघ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री मनहर भाई मेहता ने विरोध का नेतृत्व किया और गिरफ्तारी दी ।

आर्थिक गुलामी की अग्रिम चेतावनी : - भारतीय मजदूर संघ ने 1982 में सर्वप्रथम घोषणा कि, भारत वर्ष आर्थिक गुलामी की ओर बढ़ रहा है । यह भारत के लिये दूसरा स्वतंत्रता संग्राम होगा । यह युद्ध अस्त्र-शस्त्र से नहीं बल्कि इस युद्ध का मुख्य हथियार आर्थिकता होगी । भारतीय मजदूर संघ ने चेतावनी के साथ-साथ स्वदेशी का नारा दिया- " स्वदेशी अपनाओ- भारत को आर्थिक गुलामी से बचाओ । " 1982 में दी गई चेतावनी वर्तमान में हकीकत में बदलती नजर आ रही है । भारत पर देशी-विदेशी पूँजीपतियों, विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का पूरा दबाव है । भारत में छोटे-मझले उद्योग नष्ट हो रहे हैं । अमरीका का कुप्रभाव दिन प्रतिदिन इस कदर बढ़ गया है कि वर्तमान यूपीए सरकार की नीतियाँ उनसे प्रभावित हो रही हैं । कमरतोड़ महँगाई के कारण आम जनता, मजदूर परेशान है । केन्द्र सरकार इसे रोक पाने में असमर्थ है तथा अपने हाथ खड़े कर दिये हैं ।

भूत लिंगम कमेटी की रिपोर्ट - जनता पार्टी के शासनकाल में भूतलिंगम कमेटी की रिपोर्ट का विरोध करने के लिये भारतीय मजदूर संघ की अगुवाई में एक सांझा मोर्चा बनाया गया जिसका बाद में नेशनल कमेन कमेटी नाम रखा गया । जिसने 1981 में ESMA और NSA कानून का विरोध किया । इनके विरोध में देशव्यापी आन्दोलन धरने, प्रदर्शन हुये । देश में पहली बार श्रम संघों ने हड़ताल का आह्वान किया और बाद में सभी ने उसका समर्थन किया । कुछ कारणों से NCC टूट गई और भारतीय मजदूर संघ ने तय किया कि आगे अकेले ही अपने बल पर आन्दोलन करेंगे । वह निर्णय आज तक जारी है । इस निर्णय से औद्योगिक महासंघों को उद्योग स्तर पर संयुक्त मोर्चा बनाने की इजाजत दे रखी है ।

मजदूर एकता के लिये हर समय प्रयास करना - भारतीय मजदूर संघ के इतिहास में जिन घटनाओं का बहुत अधिक महत्व है उनमें 1982 में इंडियन लेबर कांफ्रेंस का है। जब केन्द्र सरकार की मजदूर विरोधी नीति और मँहगाई के खिलाफ संघर्ष करने की चार संगठनों की एकता को बनाये रखने का हर सम्भव प्रयास किया गया। इसी पृष्ठ भूमि में 17- 18 सितम्बर 1982 को त्रिपक्षीय भारतीय श्रम सम्मेलन आयोजित हुआ। भारतीय मजदूर संघ की शक्ति के पश्चात् ही क्रमांक 2 का श्रम संगठन होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस सम्मेलन में कुछ संगठनों को प्रतिनिधित्व नहीं मिला तो उन्हें लगा कि उनके साथ अन्याय हुआ है। ऐसे में सरकार का विरोध करना आवश्यक हुआ है। उस समय प्रश्न आया कि श्रम सम्मेलन में जाकर विरोध किया जाये या बाहर रहकर विरोध किया जाये। इस पर राष्ट्रीय अभियान समिति ने निर्णय किया कि इसका बहिष्कार करना है, तो भारतीय मजदूर संघ ने मजदूर एकता की खातिर बहिष्कार में सब श्रम संघों के साथ रहने का निर्णय किया।

डंकल प्रस्ताव का विरोध - 20 अप्रैल 1993 को भारतीय मजदूर संघ ने डंकल प्रस्ताव के विरोध में दिल्ली के लाल किला मैदान में ऐतिहासिक विशाल रैली की ताकि केन्द्र सरकार डंकल प्रस्ताव पर हस्ताक्षर नहीं करें। तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम शंकर दयाल शर्मा को ज्ञापन दिया।

विश्व व्यापार संगठन का विरोध - 16 अप्रैल 2001 भारतीय मजदूर संघ द्वारा विश्व व्यापार संगठन का विरोध करने के लिये एवं केन्द्र सरकार पर दबाव बनाने के उद्देश्य से रामलीला मैदान में विशाल रैली की गई। इस रैली को न भूतो की संज्ञा दी गई। इसमें एक लाख से भी अधिक मजदूरों ने भागीदारी की।

विश्व व्यापार संगठन का प्रदेश स्तर पर 38 स्थानों पर विरोध प्रदर्शन किया गया। विभिन्न प्रदेशों के लाखों कर्मचारियों ने प्रदर्शनों में शामिल होकर अपना विरोध प्रकट किया। विरोध को आगे बढ़ाते हुये वर्ष 2003 जुलाई एवं अगस्त माह में 400 जिला स्तर पर प्रदर्शन किया गया।

20 सितम्बर 2004 को भारतीय मजदूर संघ द्वारा संसद पर प्रदर्शन किया गया प्रदर्शन में मुख्य मुद्दे EPF ब्याजदर में कटौती के विरोध में तथा रोजगार गारंटी योजना को सही रूप में लागू करवाने हेतु जनहित के मुद्दे उठाये।

W.T.O. का पुनः विरोध - 23 नवम्बर 2005 को रामलीला मैदान में विशाल ऐतिहासिक प्रदर्शन WTO विश्व व्यापार संगठन के विरोध में यह प्रदर्शन भारत सरकार पर दबाव बनाने के उद्देश्य से किया गया था।

विशेष आर्थिक जोन एवं मँहगाई का विरोध - 13-20 नवम्बर 2006 को मँहगाई और विशेष आर्थिक क्षेत्र (इस्पेशल इकोनामिक जोन) को लेकर पूरे देश में जिले व उद्योग स्तर पर प्रदर्शन किये गये।

संसद पर प्रदर्शन - 12 दिसम्बर 2006 को मँहगाई और विशेष आर्थिक क्षेत्र ऐसे जन विरोधी कदम पर मजदूरों ने संसद पर प्रदर्शन किया।

ठेकेदारी प्रथा का विरोध - 24 जुलाई से 10 अगस्त 2008 तक ठेकेदारी प्रथा का जिला-उद्योग स्तर पर विरोध प्रदर्शन, विचार गोष्ठी आदि के कार्यक्रम हुये। ऐसा ही पखवाड़ा 17 सितम्बर 2008 से 2 अक्टूबर 2008 तक मनाया गया।

प्राइवेट फंड मैनेजरों की नियुक्ति का विरोध : 12 अगस्त को EPF ट्रस्ट में प्राइवेट फंड मैनेजरों की नियुक्ति को लेकर पूरे भारत वर्ष में भविष्यनिधि कार्यालयों पर प्रदर्शन किये गये।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय मजदूर संघ - 1980 सदस्यता सत्यापन में भारतीय मजदूर संघ भारत का क्रमांक-2 का संगठन बना। इस कारण अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलनों में भारतीय डेलिगेट और आब्जर्वर के रूप में मजदूरों के प्रतिनिधियों को चुनने की पद्धति में भारत सरकार को बदलाव करना पड़ा! 1984 के बाद से भारतीय डेलिगेट और आब्जर्वर में भारतीय मजदूर संघ को हर साल शामिल किया जा रहा है। 1984-1987 के बीच अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों-संगोष्ठियों में, समितियों में BMS कार्यकर्ता नियमित रूप से भाग लेने लगे। भारतीय मजदूर संघ के किसी अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक महासंघ से सम्बद्ध न होते हुये भी इसके अन्तर्राष्ट्रीय संबंध बढ़ने लगे। खेद है कि 2005 में सरकार ने BMS का डेलिगेट नहीं भेजा जबकि इंटक द्वितिय स्थान पर था उसका डेलिगेट भेजा और भारतीय मजदूर संघ आब्जर्वर बनाया इसलिए भारतीय मजदूर संघ ने U.L.O. की उस बैठक का बहिष्कार किया।

अखिल चायना ट्रेड यूनियन फेडरेशन के निमंत्रण पर - भारतीय मजदूर संघ के पाँच सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने अप्रैल 1985 में चीन की सौहार्द यात्रा की। इसमें सर्व श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी, मनहर मेहता, ओम प्रकाश अग्गी, आर. वेनुगोपाल और रासबिहारी मैत्र सम्मिलित हुये। चीन से वापसी के पहले श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने चीनी राष्ट्र और मजदूरों को एक संदेश दिया जो बीजिंग रेडियो से प्रसारित किया गया। 2005, 06 एवं 2008 के आमंत्रण पर भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि के रूप में श्री उदय पटवर्धन, श्री बैजनाथ राय, श्री अमरनाथ डोगरा, श्री हसु भाई दवे श्री तथा गिरीश अवस्थी चीन के दौरे पर गये।

अमरीकन फेडरेशन ऑफ लेबर - अमरीकन फेडरेशन ऑफ लेबर ने अपने कार्यक्रमों के अवगत भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधियों को बुलाना शुरू किया और इस प्रकार सर्व श्री राम प्रकाश कि, श्री शरद देवधर, श्री मदनलाल सैनी, श्री रामभाऊ जोशी, श्री मधुसूदन- पटवर्धन अमरीका के कार्यक्रमों में भाग लेने अलग-अलग समय पर गये।

एशियन प्राडिक्टीवि टी आर्गनाइजेशन का निमंत्रण - एशियन प्राडिक्टीविटी आर्गनाइजेशन ने मलेशिया के क्वालांपुर में आयोजित संगोष्ठी में भारतीय मजदूर संघ को निमंत्रण लिया। संगोष्ठी में श्री केशुभाई ठक्कर उपस्थित हुये। 1992 में एपीओ के द्वारा भारत के प्रतिनिधि के रूप में श्री उदय पटवर्धन चयनित हुये। 1998 मनीला फिलीपीन्स तथा 2001 टोकियो जापान में श्री के. एल. रेहड़ी ने हिस्सा लिया।

स्टॉक होम स्वीडन - 1985 में श्री ओम प्रकाश अग्गी ने स्टॉक होम स्वीडन में सुरक्षा और स्वास्थ्य परिषद् में भाग लिया।

कनाडा के मांट्रियल से निमंत्रण - सी. एस. एन द्वारा आयोजित स्वास्थ्य और देखभाल परिषद् के निमंत्रण पर डॉ. हर्षवर्धन गौतम ने भारतीय मजदूर संघ का प्रतिनिधित्व किया। इसके अलावा भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं की लम्बी सूची है जो विदेशों के कार्यक्रमों में शामिल होते रहे हैं।

आई.एलओ. के शिक्षा कार्यक्रमों में भारतीय मजदूर संघ के कई प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

विश्व सद्भाव - 1986 में राष्ट्रीय एकता व निःशस्त्रीकरण और रंगभेद विरोधी जैसे मामलों पर श्रम संगठनों द्वारा मिली-जुली कार्यवाही के लिये दस केन्द्रीय श्रम संगठनों का एक संयुक्त मंच बनाया इसका भारतीय मजदूर संघ ने स्वागत करते हुये सक्रिय सहभागिता निभाई । विश्व शांति के संयुक्त सम्मेलनों में भारतीय मजदूर संघ की सकारात्मक भागीदारी रही ।

भारतीय मजदूर संघ के सिद्धांतों को विश्व में मान्यता - भारतीय मजदूर संघ ने अपने स्थापना के समय जिन सिद्धान्तों को आधार मानकर अपना संगठन खड़ा किया । " श्रम संगठन किसी भी राजनैतिक दल के अन्तर्गत नहीं होना चाहिये। सभी सामाजिक संगठनों को स्वतंत्रता, स्वायत्तता तथा स्वावलंबन की जरूरत है " इस सिद्धान्त को विश्वभर में मान्यता मिली ।

गैर राजनीतिक श्रम संगठन को विश्व स्तर पर मान्यता - भारतीय मजदूर संघ ने जब गैर राजनैतिक संगठन की बात कही तो अन्य श्रम संगठनों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ । 13 से 20 नवम्बर 1990 में रुस की राजधानी मास्को में (12TH WORLD FEDERATION OF TRADE UNION) बारहवीं विश्व फेडरेशन ऑफ अन्तर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन स्तर की कान्फ्रेंस हुई । इस कांफ्रेंस में 133 देशों की 4000 यूनियनें से 1350 प्रतिनिधियों ने जिसमें भारतीय मजदूर संघ से श्री जी. प्रभाकर और श्री रामभाऊ जोशी ने भाग लिया था । भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधियों ने गैर राजनैतिक श्रम संगठन के समर्थन में एक प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। इसी सम्मेलन में लाल झण्डा उतारकर सफेद ध्वज फहराया। स्मरण रहे कि इससे 38 दिन पूर्व रुस के सभी श्रम संगठन एकत्रित हुये उनके द्वारा राजनैतिक मोर्चा को खारिज कर एक नया महासंघ बनाया गया था, जो कि गैर राजनैतिक था, जिसका नाम GENERAL CONFEDERATION OF TRADE UNION (GCTU) रखा गया ।

विश्व व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय श्रममानक - जुन 1994 में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के वार्षिक सम्मेलन के समय विश्व व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम मानको के सिद्धान्त के बारे में भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय संगठन मन्त्री श्री वेणु गोपाल ने जिस प्रकार विरोध प्रकट किया उसका विश्व के प्रगतिशील राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने खुशी से स्वागत

किया तथा तीसरी दुनियां के देशों के मजदूर प्रतिनिधियों ने भारतीय मजदूर संघ को सभी प्रकार के सहयोग करने की बात कही ।

भारतीय मजदूर संघ द्वारा विदेशी तकनीकी के संदर्भ में निर्धारित विशेष नीतियाँ जिनका विवरण इस प्रकार है :

- (1) वह विदेशी तकनीकी जो भारत के अनुकूल हो उस तकनीकी को ज्यों की त्यों स्वीकार कर लेना चाहिये ।
- (2) ऐसी तकनीक जिसका कुछ उपयोग भारत के उद्योग के पक्ष में हो तो हमें उतने ही भाग को लेना चाहिये बाकी भाग को छोड़ देना चाहिये। वह तकनीकी जो हमारे देश में बेरोजगारी बढ़ाये वह अपनाने के अनुकूल नहीं है उस तकनीक को अस्वीकार REJECT कर देना चाहिये।
- (3) कुछ ऐसी तकनीक जो हमारे लघु उद्योगों, कुटीर उद्योगों के अनुकूल है और वह विदेशों में नहीं बन सकती है तो हमें प्रयत्न पूर्वक अपने देश में ही तैयार करना अर्थात् EVOLVE करना चाहिये । इसके लिए सरकार द्वारा तकनीकी दक्ष लोगों को मिला कर एक तकनीकी आयोग का गठन आवश्यक है, जो समय-समय पर नई तकनीक तैयार करे ।

केन्द्रीय श्रम संगठनों की भारत सरकार द्वारा सदस्य सत्यापन - भारत सरकार द्वारा 1980 को आधार वर्ष मानकर केन्द्रीय श्रम संगठनों की सदस्यता सत्यापन करवाया गया । जिसमें भारतीय मजदूर संघ को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ ।

- पुन : 1989 वर्ष को आधार वर्ष मानकर सदस्यता सत्यापन का कार्य हुआ जिसमें भारतीय मजदूर संघ को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है ।
- अब वर्ष 2002 वर्ष को आधार वर्ष मानकर सदस्यता सत्यापन किया गया है इस बार भी भारत सरकार द्वारा घोषित परिणामों में भारतीय मजदूर संघ पुन : क्रमांक एक का श्रम संगठन घोषित हुआ है ।

भारतीय मजदूर संघ के लक्ष्य और उद्देश्य

भारतीय मजदूर संघ के संदोरा में लक्ष्य और उद्देश्य इस प्रकार है -

(क) भारतीय मान्यताओं पर आधारित समाज की पुनर्स्थापना जिसमें निम्नलिखित के लिए आश्वस्त किया जायेगा -

(1) श्रम शक्ति स्रोतों का पूरा सदुपयोग हो ताकि सभी को रोजगार मिले और अधिकतम उत्पादन किया जा सके ।

(2) मुनाफाखोरी के भाव को प्रयत्नपूर्वक सेवाभाव में बदलना जिससे आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना की जा सके और परिणामस्वरूप संपत्ति का बंटवारा बराबर इस प्रकार हो जिसका लाभ सभी नागरिकों तथा पूरे राष्ट्र को मिले ।

(3) स्वायत्तशासी -औद्योगिक समूहों को इस प्रकार विकसित करना जिससे वह राष्ट्र के अभिन्न अंग बनकर उद्योगों के श्रमिकीकरण का रास्ता साफ कर सके, ।

(4) प्रत्येक हाथ को लिविंग बेज के साथ काम उपलब्ध करना जिसके लिये समूचे राष्ट्र के अभिन्न अंग बनकर उद्योगों के श्रमिकीकरण का रास्ता साफ कर सकें ।

(ख) उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु श्रमिकों के सामर्थ्य में वृद्धि करना और उन्हें इतना बलशाली बनाना की वह अपने हितों का संरक्षण और संवर्धन शेष समाज के अनुरूप स्वयं कर सके । इसके लिये -

(1) व्यक्तिगत विश्वासों तथा राजनीतिक पसंद से ऊपर उठकर श्रमिकों को संगठित करते हुए श्रम संघ का निर्माण करना जो मातृभूमि सेवा का माध्यम बनें।

(2) संबद्ध यूनियनों का मार्गदर्शन करना, निर्देश देना, देखरेख करना और गतिविधियों में तालमेल बिठाना ।

(3) संबद्ध यूनियनों को प्रदेश तथा औद्योगिक महासंघ निर्माण में सहायता करना जो कि प्रदेश व महासंघ भारतीय मजदूर संघ के घटक के रूप में कार्य करेंगे ।

(4) श्रम संघ आन्दोलन में एकता स्थापित करना ।

(ग) श्रमिकों के लिये निम्नलिखित सुनिश्चित करना -

(1) काम का अधिकार, सेवा सुरक्षा की गारंटी, सामाजिक सुरक्षा, ट्रेड यूनियन गतिविधियों के संचालन का अधिकार और समस्या समाधान के सभी उपाय समाप्त हो जाने पर समस्या समाधान हेतु पूर्ण हड़ताल का अंतिम अस्त्र के नाते प्रयोग ।

(2) काम की शर्तों में सुधार तथा निजी एवं समाजिक व औद्योगिक जीवन में उत्थान।

(3) पैसे और पसीने की कीमत समान हो ।

(4) श्रमिक हित में विद्यमान श्रम अधिनियमों को लागु कराने का प्रयत्न करना ।

(5) श्रमिक प्रतिनिधियों के परामर्श से नये श्रम कानूनों की रचना करवाना ।

(घ) श्रमिक के मन में सेवा भाव तथा उद्योग के प्रति जवाबदेही जिम्मेदारी की भावना जगाना।

(ङ) श्रमिकों में ऐसी राष्ट्र भक्ति का निर्माण करना जो सहिष्णु एवं विजयिष्णु हो।

1991 में केन्द्र सरकार द्वारा घोषित

नई आर्थिक एवं औद्योगिक नीति पर

भारतीय- मजदूर संघ देश का पहला श्रम संघ है जिसने नई आर्थिक एवं औद्योगिक नीति का विरोध करते हुये द्वितीय आर्थिक स्वतंत्रता संग्राम का नारा दिया और कुछ रचनात्मक विकल्प भी सुझाए हैं । विश्व बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा हमारे देश पर थोपी जा रही शर्तों का विरोध किया है क्योंकि इन शर्तों के कारण हमारी सार्वभौमिकता ही खतरे में पड़ रही है । अतः आर्थिक स्वदेशी माडल द्वारा देशी उत्पादों को प्रयोग में लाने की मुहिम छेड़ दी है । घाटे में चल रहे सार्वजनिक प्रतिष्ठानों को लाभकारी उद्योग में बदलने के लिए सहयोग देने की पेशकश की है साथ ही श्रमिकों से आग्रह किया है कि वे अपने अपने उद्योगों को मजबूती से चलाने में सहयोग करें ।

भारतीय मजदूर संघ के स्थायी वार्षिक कार्यक्रम

(1) भारतीय मजदूर संघ का स्थापना दिवस 23 जुलाई

(2) राष्ट्रीय श्रम दिवस (विश्वकर्मा जयन्ती) 17 सितम्बर

(3) समरसता दिवस (पुण्यतिथि – स्व. दत्तोपंत ठेंगड़ी जी) 14 अक्टूबर

- | | |
|--|------------|
| (4) पर्यावरण दिवस (अमृता देवी बलिदान दिवस) | 28 अगस्त |
| (5) सर्व पंथ समादर मंच (श्री गणेश शंकर विद्यार्थी बलिदान दिवस) | 25 मार्च |
| (6) स्वदेशी दिवस (बाबू गेगू बलिदान दिवस) | 12 दिसम्बर |

हमारे नारे

- (1) भारत माता की - जय हो, जय हो
- (2) देश के हित में करेंगे काम - काम के लेंगे पूरे दाम
- (3) देशभक्ति तेरा नाम - बीएमएस, बीएएमएस.
- (4) BMS की क्या पहचान – त्याग, तपस्या और बलिदान
- (5) पैसे और पसीने की - कीमत समझो एक समान
- (6) आय विषमता समाप्त हो - एक दश अनुपात हो
- (7) देश की रक्षा पहला काम - सबको काम, बांधों दाम
- (8) देशभक्त मजदूरों - एक हो, एक हो
- (9) नया जमाना आएगा - कमाने वाला खिलायेगा
- (10) बोनस हमारा - विलम्बित वेतन
- (11) बोनस सबको - देना होगा, देना होगा
- (12) मजदूरों दुनियां को - एक करो, एक करो
- (13) श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण हो, राष्ट्र का उद्योगीकरण हो, उद्योगों का श्रमिकीकरण हो
- (14) जब तक भूखा इंसान रहेगा - धरती पर तुफान रहेगा
- (15) मजदूर मजदूर भाई भाई - लड़ कर लेंगे पाई पाई
- (16) लाल गुलामी छोड़ कर - बोलो वन्दे मातरम

- (17) देश के कोने-कोने से - मजदूरों ने ललकारा है
(18) उद्योगों में भागीदारी - यही हमारा नारा है
(19) गलत कड़े तोड़ दो - मंहगाई वेतन जोड़ दो
(20) कौन बनाता हिन्दुस्तान - भारत का मजदूर किसान
(21) ठेकेदारी प्रथा समाप्त करो - समाप्त करो, समाप्त करो

हमारा प्रमुख गीत

मानवता के लिए उषा की किरण जगाने वाले हम ।

शोषित, पीड़ित, दलित जनों का, भाग्य बनाने वाले हम ।

हम अपने श्रम-सीकर से ऊसर में स्वर्ण उगा देंगे ।

कंकड़ पत्थर समतल कर, कांटों में फूल खिला देंगे ।

सतत् परिश्रम से अपने है, वैभव लाने वाले हम ।

शोषित, पीड़ित, दलित जनों का, भाग्य बनाने वाले हम ।

अन्य किसी के मुँह की रोटी, हरना अपना काम नहीं,

पर अपने अधिकार गंवा कर, कर सकते आराम नहीं ।

अपने हित औरों के हित का, मेल मिलाने वाले हम ।

शोषित, पीड़ित, दलित जनों का, भाग्य बनाने वाले हम ।

रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, आवश्यकता जीवन की,

व्यक्ति और परिवार सुखी हो, तभी मुक्ति होती सच्ची ।
हंसते-हंसते राष्ट्र-कार्य में, शक्ति लगाने वाले हम ।
शोषित, पीड़ित, दलित जनों का, भाग्य बनाने वाले हम ।

भारत माता का सुख गौरव, प्राणों से भी प्यारा है ।
युग-युग से मानव-हित करना, शाश्वत धर्म हमारा है ।
जीवन शक्ति उसी माता की, भेंट चढ़ाने वाले हम,
शोषित, पीड़ित, दलित जनों का, भाग्य बनाने वाले हम ।

हमारा ध्वज गीत

अब भारत में मजदूरों का, भगवा, ध्वज लहरायेगा।
हर श्रमिक जब राष्ट्र भक्ति की, ज्वाला में तप जायेगा।
चक्र-मुष्टि-गेहूं की बाली के, संग जब भगवा डोलेगा।
तब देखो भारत में फिर से, राम राज आ जायेगा।

स्वतन्त्र भारत की स्वतन्त्र, ही अर्थनीति बन जायेगी।
श्रम नीति भी स्वतंत्र होगी, तब समृद्धि आयेगी।
श्रम-धन और उत्पादन को जब, पूर्ण न्याय मिल पायेगा । । तब देखो भारत

जो श्रम का अपमान करेगा, वह उसका फल पायेगा।
राष्ट्र भक्ति की कसौटियों पर उसको तौला जायेगा।

संगठित होकर श्रमिक यह चमत्कार दिखलायेगा। । 2 । । तब देखो भारत.....

किसान अपना भाग्य लिखेगा, अपने हल की नौको से।

मजदूर का सम्मान बढ़ेगा, बहते हुए पसीने से ।

हम ही है सब भाग्य विधाता, जन-गन-मन जब गायेगा । । 3 । । तब देखो भारत

भगवे ध्वज की त्याग- तपस्या, बलिदानों की परम्परा ।

पुरखों ने भी अपने खूँ से, है इतिहास लिखा सारा ।

भारत माता की जय हो, यह नारा गगन गुंजायेगा । । 4 । ।

तब देखो भारत में फिर से राम राज आ जायेगा ।

Digitised By Swadeshi Vichar Kendra

B-708, Marwar Apartment,
14-E, Chopasani Housing Board,
Jodhpur 342008, Rajasthan

email: thehinduway@gmail.com

mob. 9414126770

ph. 0291-2710123

Please Help the Website By sending us Shradhyaya Dattopant Thengadi's Books,
Audios, Videos, Photos, Letters, Articles, etc.

विनम्र निवेदन

श्रद्धेय दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी की पुस्तकें, ऑडियो भाषण, वीडियो, फ़ोटो, लेख, पत्र आदि भेज कर
वेब साईट के लिए सहयोग करें।